Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

हाईस्कूल स्तर के कोचिंग करने वाले एवं कोचिंग न करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 अरुण कुमार मिश्र
शोध निर्देशक, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज
रंजना मिश्रा
शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र), नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज

Article Info

Volume 5, Issue 3

Page Number : 61-67

Publication Issue :

May-June-2022

Article History

Accepted : 05 May 2022

Published : 15 May 2022

सारांशिका- प्रस्तुत अध्ययन ''हाईस्कूल स्तर के कोचिंग करने वाले एवं कोचिंग न करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन'' करना है। अध्ययन के उद्देश्यों में विद्यार्थियों, छात्रों एवं छात्राओं का अलग–अलग अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णानात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन आकस्मिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है। न्यादर्श के रूप में जौनपुर जनपद के 300 विद्यार्थियों को लिया गया है। इनमें से ट्यूशन या कोचिंग संस्थानों में पढ़ने वाले 150 विद्यार्थी (75 छात्र और 75 छात्राएं) तथा कोचिंग संस्थानों में न पढ़ने वाले 150 विद्यार्थी (75 छात्र और 75 छात्राएं) का चयन किया गया है। हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि का मापन करने के लिए उपलब्धि परीक्षण का निर्माण स्वयं किया है। प्रस्तुत शोध कार्य में अनुसंधानकर्त्री ने प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए सांख्यिकी का प्रयोग किया। प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान ज्ञात किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने वाले एवं कोचिंग न करने वाले समस्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है। हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने वाले तथा कोचिंग न करने वाले छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है। हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने वाली तथा कोचिंग न करने वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है।

मुख्यशब्द:– तुलनात्मक अध्ययन, हाईस्कूल

भूमिका–

बढ़ती हुई जनसंख्या की रफ्तार ने शैक्षिक समस्या को दिन–प्रतिदिन बढ़ाया है। जिस अनुपात में जनसंख्या बढ़ी है उस अनुपात में शिक्षक और विद्यालय नहीं बढ़े जिससे बेरोजगारी बढ़ी है। अभिभावकों का सम्बन्ध पाल्यों के प्रति उदासीन व समयाभाव का नजरिया व साथ ही उनका भौतिकवादी दृष्टिकोण, ये सभी कारक प्राइवेट टयूशन और कोचिंग संस्थानों को जन्म देने में सहायक सिद्ध हुए है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

जहां तक कोचिंग संस्थानों के इतिहास का प्रश्न है वह दो से ढाई दशक पुरानी शिक्षा व्यवस्था है, जिसने अपने चंगुल में विद्यार्थियों के साथ–साथ शिक्षकों को भी जकड़ना शुरू कर दिया है। एक छोटे से तालाब में तैरती इस तथाकथित कागज की नाव ने आज महासागर में तैरते हुए बड़े जहाज का रूप ले लिया है। अपने आकर्षक विज्ञापनों में निश्चित सफलता, अनवरत् प्रगति सुनिश्चित एवं सुरक्षित भविष्य के सपनों का प्रचार करने वाली इन संस्थाओं ने देश के लाखों शिक्षाविद्ों एवं शिक्षार्थियों के साथ–साथ शिक्षा प्रेमियों को अपने गिरफ्त में ले लिया है।

कोचिंग की संस्कृति देश में अपनी जड़े जमा चुकी है। इसे समाज की स्वीकृति भी मिल गयी है तथा सरकारी क्षेत्र की शिक्षा व्यवस्था वाली संस्थाएं अप्रासंगिक हो गयी है। इसलिए ट्यूशन या कोचिंग को आवश्यकता समझा जाने लगा है।

हाईस्कूल स्तर पर छात्रों की एक बहुत बड़ी संख्या द्वारा कोचिंग संस्थाओं में नामांकन कराना इस बात का परिचायक है कि कोचिंग उनकी विभिन्न शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करती है। कतिपय उदाहरणों से यह अनुमान भी होता है कि छात्रों की उपलब्धि उन्नयन में कोचिंग संस्थानों की भूमिका सकारात्मक होती है। वर्तमान शिक्षण व्यवस्था में कोचिंग के प्रति छात्रों के झुकाव एवम् निरंतर बढ़ती संख्या शोध के क्षेत्र में एक नये विषय का प्रादुर्भाव करती है।

समाचार पत्रों, पत्रिकाओं व विभिन्न पत्रों में कोचिंग–संस्थानों व प्राइवेट ट्यूशन के प्रति दिन–प्रतिदिन बुराईयों तथा सरकार द्वारा कोचिंग व ट्यूशन संस्कृति को रोकने हेतु किए जा रहे तमाम तथाकथित प्रयासों के बाद भी यह संस्कृति निरन्तर बढ़ती ही जा रही है। प्रारम्भ में जहां कोचिंग संस्थानों की संख्या सीमित थी अब इन संस्थाओं की संख्या असीमित हो गयी है। कोचिंग और प्राइवेट ट्यूशनों की निरन्तर बढ़ती संख्या इस बात का द्योतक है कि इनमें कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो विद्यार्थियों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर रही है। जिससे हाईस्कूल स्तर पर कक्षाओं में विद्यार्थियों की उपस्थिति उनके नामांकन की तुलना में बहुत कम रहती है तथा कोचिंग संस्थानों में छात्रों की उपस्थिति बहुत ज्यादा हो गयी है इसलिए शोधकर्त्री ने अपने अनुसंधान ''हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के लिए कोचिंग की आवश्यकता एवं उसके प्रभाव का अध्ययन'' द्वारा यह जानने का प्रयास किया कि कोचिंग छात्रों की उपलब्धि को कितना प्रभावित करती है तथा इसका क्या प्रभाव उनकी उपलब्द्धि पर पड़ता है।

समस्या कथन–

प्रस्तुत अध्ययन का शीर्षक– **''हाईस्कूल स्तर के कोचिंग करने वाले एवं कोचिंग न करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्द्धि का तुलनात्मक अध्ययन'' हैं।**

अध्ययन के उद्देश्य–

1. हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने वाले एवं कोचिंग न करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्द्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने वाले एवं कोचिंग न करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्द्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने वाले एवं कोचिंग न करने वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना–

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने वाले एवं कोचिंग न करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है।
2. हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने वाले एवं कोचिंग न करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है।
3. हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने वाले एवं कोचिंग न करने वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णानात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या–

जौनपुर जनपद के हाईस्कूल स्तर पर अध्ययन कर रहे छात्र–छात्राओं को प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों के सामान्यीकरण हेतु जनसंख्या समझा गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन आकस्मिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है। न्यादर्श के रूप में जौनपुर जनपद के 300 विद्यार्थियों को लिया गया है। इनमें से ट्यूशन या कोचिंग संस्थानों में पढ़ने वाले 150 विद्यार्थी (75 छात्र और 75 छात्राएं) तथा कोचिंग संस्थानों में न पढ़ने वाले 150 विद्यार्थी (75 छात्र और 75 छात्राएं) का चयन किया गया है।

शोध उपकरण–

हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि का मापन करने के लिए उपलब्धि परीक्षण का निर्माण स्वयं किया है। उक्त मापनी में कक्षा 10 के विज्ञान तथा गणित के प्रश्नों का चयन ब्लू प्रिंट बनाकर किया गया है। उपलब्धि परीक्षण मापनी के प्रारम्भिक स्वरूप में विज्ञान के 50 प्रश्न तथा गणित के 50 प्रश्न कुल 100 प्रश्नों का निर्माण किया गया था। उपलब्धि परीक्षण के अन्तिम प्रारूप में कुल 25 प्रश्न विज्ञान से तथा 25 प्रश्न गणित से चयनित किये गये। प्रत्येक प्रश्न के लिए चार विकल्पों का प्रावधान किया गया है। प्रत्येक प्रश्न के लिए विद्यार्थी को उपयुक्त विकल्प पर अपनी प्रतिक्रिया देनी होती है। प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम 1 अंक का प्रावधान तथा न्यूनतम 0 अंक का प्रावधान किया गया है अर्थात् कोई विद्यार्थी उपलब्धि परीक्षण पर अधिकतम 50 अंक तथा न्यूनतम 0 अंक प्राप्त कर सकता है।

मापनी पर उत्तर प्राप्त करने के लिए 1 घंटे की समय सीमा निर्धारित की गयी है। प्रस्तुत परीक्षण अपने प्रकृति के कारण व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनो ही स्थितियों में प्रयुक्त किया जा सकता है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी–

प्रस्तुत शोध कार्य में अनुसंधानकर्ता ने प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए सांख्यिकी का प्रयोग किया। प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान ज्ञात किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. **हाईस्कूल स्तर के कोचिंग करने वाले तथा कोचिंग न करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या**

सारणी संख्या 1

कोचिंग करने वाले तथा कोचिंग न करने वाले विद्यार्थियों से सम्बन्धित उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं t–अनुपात

न्यादर्श	संख्या N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	अन्तर $D= M_1 \sim M_2$	σ_D	t-अनुपात	सारणीमान 0.01 सार्थकता स्तर पर
कोचिंग करने वाले विद्यार्थी	150	66.87	12.6	1.47	0.4	3.67*	2.34
कोचिंग न करने वाले विद्यार्थी	150	65.4	12.5				

*0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 से प्रदर्शित होता है कि कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों एवं कोचिंग न करने वाले विद्यार्थियों का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 66.87, 12.6 तथा 65.4, 12.5 है। परिगणित t-अनुपात का मान 3.67 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीमान 2.34 से अधिक है। अतः यह प्रदर्शित होता है कि शोध परिकल्पना सं0 01 ''हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने वाले तथा कोचिंग न करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर है।'' 0.01 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

अर्थात् दोनो मध्यमानों में प्रदर्शित अन्तर वास्तविक है। अतः कहा जा सकता है कि कोचिंग करने वाले तथा कोचिंग न करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि समान नहीं है। अर्थात् कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि कोचिंग न करने वाली विद्यार्थियों की उपलब्धि से अधिक है।

प्राप्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि सम्भवतः कोचिंग करने वाले विद्यार्थी अपने विद्यालय में अपने समूह के साथ–साथ कोचिंग में अन्य विद्यालयों के विद्यार्थियों के साथ पढ़ते है जिससे उनमें नयी स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना का विकास होता है जिसके फलस्वरूप वे अपने विषय वस्तु पर ज्यादा ध्यान देते है और अपने समूह में हमेशा आगे रहना चाहते है। जिसके कारण इनकी उपलब्धि कोचिंग न करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा स्वभाविक प्रतीत होता है।

2. हाईस्कूल स्तर के कोचिंग करने वाले तथा कोचिंग न करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या 2

कोचिंग करने वाले तथा कोचिंग न करने वाले छात्रो से सम्बन्धित उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं t–अनुपात

न्यादर्श	संख्या N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	अन्तर $D= M_1 \sim M_2$	σ_D	t-अनुपात	सारणीमान 0.01 सार्थकता स्तर पर
कोचिंग करने वाले छात्र	75	66.96	12.4	1.69	.57	2.96	2.35
कोचिंग न करने वाले छात्र	75	65.27	12.2				

*0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 2 से प्रदर्शित होता है कि कोचिंग करने वाले एवं कोचिंग न करने छात्रों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 66.96, 12.4 एवं 65.27, 12.2 है। परिगणित t-अनुपात का मान 2.96 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीमान 2.35 से अधिक है। अतः यह प्रदर्शित करता है कि शोध परिकल्पना सं0 02 ''हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने तथा कोचिंग न करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर है।'' 0.01 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

अर्थात् दोनो मध्यमानों में प्रदर्शित अन्तर वास्तविक है। अतः कहा जा सकता है कि कोचिंग करने वाले तथा कोचिंग न करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि समान नहीं है। अर्थात् कोचिंग करने वाले छात्रों की उपलब्धि कोचिंग न करने वाले छात्रों से अधिक है।

प्राप्त परिणामों के पक्ष में कहा जा सकता है कि सम्भवतः कोचिंग करने वाले छात्र अतिरिक्त पैसा दे करके अध्ययन की सुविधा प्राप्त करते है। अतः उनके अभिभावकों का दबाव भी होता हैं परिणामतः मात्र विद्यालयों में अध्ययन छात्रों की अपेक्षा ये छात्र कोचिंग में अपनी कक्षाएं नियमित लेते है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि इन छात्रों को विषय वस्तु अनुदेशन दो बार प्राप्त होते है। जिसके कारण इनकी उपलब्धि कोचिंग न करने वाले छात्रों की अपेक्षा स्वभाविक प्रतीत होता है।

3. हाईस्कूल स्तर के कोचिंग करने वाले तथा कोचिंग न करने वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या 3

कोचिंग करने वाली तथा कोचिंग न करने वाली छात्राओं से सम्बन्धित उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं t–अनुपात

न्यादर्श	संख्या N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	अन्तर $D= M_1 \sim M_2$	σ_D	t-अनुपात	सारणीमान 0.01 सार्थकता स्तर पर
कोचिंग करने वाली छात्राएं	75	67.4	12.7	1.87	.58	3.22*	2.35
कोचिंग न करने वाली छात्राएं	75	65.53	13.00				

*0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 3 से प्रदर्शित होता है कि कोचिंग करने वाली एवं कोचिंग न करनी वाली छात्राओं का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 67.4, 12.7 तथा 65.53, 13.0 है। परिगणित t-अनुपात का मान 3.22 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीमान 2.35 से अधिक है। अतः यह प्रदर्शित करता है कि शोध परिकल्पना सं0 03 ''हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने वाली तथा कोचिंग न करने वाली छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में अंतर है।'' 0.01 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

अर्थात् दोनो मध्यमानों में प्रदर्शित अन्तर वास्तविक है। अतः कहा जा सकता है कि कोचिंग करने वाली तथा कोचिंग न करने वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि समान नहीं है। अर्थात् कोचिंग करने वाली छात्राओं की उपलब्धि कोचिंग न करने वाली छात्राओं की उपलब्धि से अधिक है।

प्राप्त परिणामों के पक्ष में कहा जा सकता है कि सम्भवतः कोचिंग करने वाले छात्राओं के अभिभावकों अपने पाल्यों के शिक्षा के प्रति ज्यादा जागरुक है तथा वे उनसे सामान्य छात्राओं से कुछ ज्यादे की अपेक्षा रखते है। परिणामतः ये छात्राएं विद्यालयी अध्ययन के साथ–साथ ये कोचिंग कक्षाएं भी नियमित लेती है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि ये छात्राएं घर पर कम घरेलू कार्य करती है तथा विषय वस्तु का पुनः अभ्यास करती है जिसके कारण इनकी उपलब्धि कोचिंग न करने वाली छात्राओं की अपेक्षा स्वाभाविक प्रतीत होती है।

निष्कर्ष–

अध्ययन कार्य में प्राप्त आंकड़ो के विश्लेषण के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत् है।

1. हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने वाले एवं कोचिंग न करने वाले समस्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है।
2. हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने वाले तथा कोचिंग न करने वाले छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है।
3. हाईस्कूल स्तर पर कोचिंग करने वाली तथा कोचिंग न करने वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है।

सुझाव–

यद्यपि ट्यूशन व कोचिंग संस्थाएं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई है। किन्तु इसकी आवश्यकता सम्बन्धी कारणों के विश्लेषण से पता चलता है कि विद्यालयों में शिक्षकों का शिक्षा के प्रति उदासीन रवैया, विद्यार्थियों पर ध्यान न देना, सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का न पढ़ाया जाना तथा विद्यालयों में अधिक छुट्टियाँ भी कोचिंग व ट्यूशन की आवश्यकता को जन्म देती हैं। जिसके फलस्वरूप नयी–नयी कोचिंग संस्थानों का उदय हो रहा है तथा विद्यालयी संस्थान अपनी प्रासंगिकता खोते जा रहे हैं। विद्यालयी संस्थानों में सुधार की आवश्यकता है जिससे कोचिंग व ट्यूशन की आवश्यकता तथा प्रभाव को कम किया जा सके क्योंकि घर के बाद विद्यालय सबसे महत्वपूर्ण स्थल है जहाँ बालक का सर्वांगीण विकास होता है। अतः विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थियों के लिए शिक्षा ग्रहण में सहायक होना चाहिए। विद्यालयों में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को पढ़ाया जाना चाहिए तथा यथा सम्भव उसकी पुनरावृत्ति कराया जाना चाहिए। विद्यालयों के सतत् अध्ययन के लिए प्रेरित करना चाहिए। विद्यालयी संस्थानो में छात्र–शिक्षक अनुपात सन्तुलित होना चाहिए जिससे प्रत्येक विद्यार्थी पर समुचित ध्यान दिया जा सके। विद्यार्थियों की प्रगति रिपोर्ट समय–समय पर अनेक अभिभावकों को दी जानी चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, एस0पी0 (2004), ''सांख्यिकीय विधियां'', इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
2. चामुण्डेश्वरी, एस0 (2013). इमोशनल इन्टेलिजेन्श एण्ड ऐकेडमिक एचिवमेन्ट एमंग स्टूडेन्ट्स ऐट द हायर सेकेण्डरी लेवल, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ ऐकेडमिक रिसर्च इन इकोनॉमिक्स एण्ड मैनेजमेन्ट साइन्सेस, 2(4), पृ0 178–187
3. पाण्डेय, अनुजा (2008). +2 स्तर पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
4. मिश्रा, एम0 *''ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ द इन्फ्लूयेन्स ऑफ सोसियो–इकोनॉमिक स्ट्रेटस ऑन एकेडमिक एचीवमेन्ट ऑफ हायर सेकेण्डरी स्टूडेन्ट्स इन रुरल एण्ड अरबन एरिया ऑफ कानपुर'',* पी0एच0डी0 एजूकेशन, कानपुर युनिवर्सिटी 1986
5. सुल्ताना, एस *''ए स्टडी ऑफ स्कूल स्कूल एचीवमेन्ट एमंग ऐडोलसेन्ट चिल्ड्रेन विथ वर्किंग एण्ड नान–वर्किंग मर्दस'',* पी0एच0डी0 एजुकेशन, कुरुक्षेत्र युनिवर्सिटी, 1988
6. सुभ्रामण्यम के. एण्ड निवासराव, के.श्री., जनरल ऑफ कम्युनिटी गाइडेन्स एण्ड रिसर्च, जुलाई 2008, वैल्यूम–25, नं0 2
7. शानमुगसुन्दरम, आर0 ''ए इन्वेस्टीगेशन इन टू फैक्टर्स रिलेटेड टू एकेडमिक एचीवमेन्ट एमंग अण्डर ग्रेजुएट स्टूडेन्ट्स अण्डर सेमेस्टर सिस्टम'', पी0एच0डी0 सॉइकालजी, मद्रास युनिवर्सिटी 1983
8. सिंह, अरूण कुमार (2006), ''मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ'', पटनाः मोतीलाल बनारसी दास।
9. सिंह, अरूण कुमार (2008), ''शिक्षा मनोविज्ञान'', पटनाः भारती भवन।